प्रकाशनार्थ।

01 अक्टूबर,2023 गोरखपुर।

युगपुरुष ब्राह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 54 वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 9 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के अंतर्गत आयोजित संगोष्ठी के क्रम में पांचवे दिन " भारतीय संस्कृति एवं गो सेवा " विषयक संगोष्ठी के मुख्य वक्ता सुग्रीव किलाधीश अयोध्याधाम से पधारे स्वामी विश्वेश प्रपन्नाचार्य जी महाराज ने कहा कि यह गोरखपुर पीठ सनातन संस्कृति की पहचान है । भारतवर्ष की जो भी भावनाएं, आस्था व श्रद्धा का विषय है सबका संरक्षण इस गोरखपुर पीठ के द्वारा किया जाता है । हमारे पूज्य महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज उन सभी परंपराओं का अच्छी तरह से निर्वहन करते हैं । गौ माता की सेवा उनके दिनचर्या का अभिन्न अंग है। वीना गाय को ग्रास खिलाए स्वयं अन्न नहीं ग्रहण करने का उनका संकल्प है। हमारी संस्कृत में माता, पिता ,गुरु और गाय में देवता का भाव रखा जाता है। हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि जो वृद्धो की सेवा करता हैं उसकी आयु, विद्या, यश और बाल इन चारों की वृद्धि होती है । आज यह गोरक्षपीठ विश्व को शिक्षा दे रही है। पूरी दुनिया गोरक्षपीठ को भारतीय संस्कृति के केंद्र के रूप में देख रही है। कटक उड़ीसा से पधारे महंत शिवनाथ जी महाराज ने कहा कि भारतीय सभ्यता का प्रभाव केवल भारतवर्ष में ही नहीं अपितु अफगानिस्तान से इंडोनेशिया तक व्यापक है । भारतीय संस्कृति के 16 स्तंभ है जिसमें चार वेद, चार आश्रम ,चार वर्ण और चार पुरुषार्थ है। इन्हीं पर भारतीय संस्कृति टिकी हुई है। हमारी संस्कृति में गाय, नारी, वृद्ध और संतों में आदर का भाव तथा उनकी सेवा करने पर विशेष बल दिया गया है। इंगलैंड के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक जो भारतीय संस्कृति को मानने वाले हैं उन्होंने शपथ लेने के पूर्व गौ माता की पूजा किया था। चारधाम मंदिर उज्जैन से पधारे आचार्य रामस्वरूप ब्रह्मचारी जी महाराज ने कहा कि हमारा देश वह देश है जहां अतिथि के स्वागत में दूध, दही और छाछ दिया जाता था। परंतु बीच के काल खंड में गाय दर-दर भटक रही थी और गायक को काटा जा रहा था। परंतु हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे देश और प्रदेश में मोदी जी और योगी जी जैसे नेता मिले हैं ।अब गो हत्या को अपराध माना जा रहा है और गौ सेवा के लिए गौशालाएं खोले जा रहे हैं। सतुवा बाबा आश्रम काशी से पधारे महंत संतोष दास जी ऊर्फ सातुवा बाबा ने कहा कि ब्रह्मलीन महंत दिग्गविजयनाथ जी महाराज व राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज अपने पूरे जीवन भर गो सेवा तथा तो सुरक्षा के प्रयास करते रहे। कार्य पृथ्वी की श्रृंगार है। गाय पृत्वी की प्रत्यक्ष देवता है। इनके पंचगव्य में वो शक्ति होती है जिससे व्यक्ति शारीरिक तथा आध्यात्मिक दोनों तरह से पुष्ट हो सकता है। गाय की रक्षा तथा सेवा हम सभी युवाओं के हाथ में है। हमारा स्वस्थ जीवन गो माता के खाद से उत्पन्न अन्न में ही है। नीमच मध्य प्रदेश से पधारे महंत लालनाथ जी महाराज ने कहा कि हमारे शास्त्रों में गो माता के ऊपर विशेष

वर्णन मिलता है। हमारी संस्कृत में किसी शुभ कार्य करने से पहले गौ माता के गोबर व मूत्र से भूमि को लीप कर वहां पूजा करते हैं । इससे वातावरण भी शुद्ध होता है। महंत अवेद्यनाथ जी महाराज किसी को भी चाय पीने नहीं देते थे । वे मंदिर में आने वाले सभी लोगों को गौ माता का छाछ पिलाते थे और खुद भी पीते थे । यह परंपरा आज भी गोरखनाथ मंदिर की है। छांछ पीने से पेट के सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति मिलती है। अपने गुरु के पद चिन्हों पर चलते हुए माननीय मुख्यमंत्री जी पूरे प्रदेश में गोपालन को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी देने की योजना ले लाए है , इससे गोपालन में लोगो की रुचि बढ़ी है। गाय के पंचगव्य के सेवन से जीवन सुखमय रहेगा। कालीबाड़ी के महंत रविंद्रदास जी महाराज ने कहा कि भारतीय संस्कृत में गौ माता का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। गौ माता में श्रद्धा रखकर यदि कोई कार्य करें तो सफलता अवश्य मिलती है । हमें पूरी श्रद्धा व विश्वास के साथ गौ माता की सेवा करनी चाहिए। अध्यक्षीय उद्बोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं पूर्व कुलपति प्रो उदय प्रताप सिंह ने कहा कि भी भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक धार्मिक सांस्कृतिक विचारो का संगम है। गाय के पंचगव्य से अनेक औषधि बनती है। गो सेवा का तात्पर्य गो वंश की सेवा है अर्थात गाय से बछड़े का भी सेवा हो। गो सेवा यह और पर लोक दोनो को संवारती है। पुरस्कृत गोसेवक एवं पूर्व पशुधन प्रसार अधिकारी वरुण कुमार वर्मा बैरागी जी ने गौ माता के ऊपर अपनी स्वरचित कविता सुनाई। वैदिक मंगलाचरण डॉ रंगनाथ त्रिपाठी , गोरक्षाष्टक पाठ आदित्य पांडे व गौरव तिवारी तथा संचालन माधवेंद्र राज ने किया ।

इस अवसर पर भीड़भंजन महादेव गुजरात से पधारे महंत कमलनाथ जी , महंत गंगादासजी , मंहत जगदीश नाथ जी, महंत गंगादास जी, योगी कमलनाथ जी, महंत मिथलेश नाथ जी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।